नीम और उसके सौ उपयोग

नीम के गुण-धर्म

(संशोधित और परिवर्द्धित संस्करण)

लेखक—

पं० गंगाप्रसाद गांगेय

—:*:—
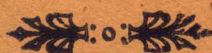
प्रकाशक—

तेजकुमार बुकडिपो (प्रा०) लिमिटेड, लखनऊ

उत्तराधिकारी—नवलकिशोर बुकडिपो, लखनऊ

सातवीं बार २००० } सन् १९८९ ई० {

नीम और उसके सौ उपयोग

नीम के गुण-धर्म

नीम भारतवर्ष का वह उपयोगी वृक्ष है, जिससे छोटे-बड़े सभी परिचित हैं। यह देश के प्रायः प्रत्येक भाग में बहुतायत से पाया जाता है। शाखा-प्रशाखाओं से युक्त नीम का घना वृक्ष कितना सुहावना लगता है, यह बताने की आवश्यकता नहीं। नीम की शीतल छाया कितनी सुखद और तृप्तिकर होती है, इसका अनुभव सभी को होगा। नीम की लकड़ी मकान बनवाने के काम में कितनी मजबूत और टिकाऊ होती है, यह सभी गृहस्थ जानते हैं। परन्तु आँखों के सामने सदैव दीखने-वाले इस वृक्ष में कितने गुण हैं, इसके अंग-प्रत्यंग का भिन्न-भिन्न रोगों में कैसा सफल उपयोग होता है—इसे बहुत कम लोग जानते हैं।

नीम का अंग-प्रत्यंग कटु होता है। परन्तु इसकी कटुता में गुणों की वह मिठास निहित है, जिसके लिए मानव-जाति पर नीम का अपरिमित आभार है। उर्दू की एक लोक-प्रचलित कहावत है—'नीम हकीम', जो कि अधकचरे वैद्य-हकीमों के लिए प्रयुक्त होती है,

क्योंकि 'नीम' का अर्थ फारसी में 'आधा' होता है। परन्तु यदि नीम के वृक्ष को ही नीम-हकीम कहा जाय, तो कोई अतिशयोक्ति न होगी; क्योंकि अकेली नीम सैकड़ों रोगों की दवा है। नीम में वह कीटाणुनाशक शक्ति मौजूद है कि यदि निरन्तर नीम की छाया में शयन किया जाय तो सहसा कोई रोग होने की सम्भावना न हो। हाँ, सायंकाल नीम के नीचे शयन करने का निषेध है। एक जनश्रुति है कि एक भला-चंगा मनुष्य कार्यवशात् अपने गाँव से कई मील दूर एक वैद्य के पास गया। वह व्यक्ति जिस सड़क से गया था, उसके एक ओर एकदम बबूल के वृक्ष थे और दूसरी ओर नीम के। वह मनुष्य बबूल के वृक्षों की छाया में होकर गया। वैद्य के पास पहुँचते-पहुँचते वह रोगाक्रान्त हो गया। वैद्य ने रोग का लक्षण और कारण जानकर उसे निर्देश किया कि वह लौटती बार नीम के वृक्षों की छाया से होकर जाय। उस व्यक्ति ने वैसा ही किया और घर पहुँचते-पहुँचते स्वस्थ हो गया। अस्तु !

सन् १९३५ ई० में महात्मा गाँधी ने नीम की पत्तियाँ खाकर उसके गुणावगुण जानने का उद्योग किया था। उन्होंने नीम के सेवन के बहुत-से लाभ बताये

और बताया कि नीम के सेवन से किसी प्रकार की हानि की आशंका नहीं की जा सकती। इसी सिल-सिले में महात्माजी ने कूनूर के न्यूट्रीशन रिसर्च डाइरेक्टर डाक्टर इक्राइड के पास नीम की पत्तियों के सम्बन्ध में कुछ प्रश्न भेजे थे, जिनके उत्तर में उक्त डाक्टर महोदय ने लिखा है—

"हमने अपनी प्रयोगशाला में नीम की पत्तियों का विश्लेषण किया है। पहले जिन अनेक हरी पत्तियों का विश्लेषण किया गया है, उनके मुकाबले में इन पत्तियों में पोषक तत्त्व अधिक मात्रा में मौजूद हैं। पकी हुई पत्तियों और कोपलों दोनों में ही प्रोटीन, कैल्सियम, लोहा और विटामिन ए पर्याप्त मात्रा में होते हैं। और इस दृष्टि से नीम की पत्तियाँ चौलाई, धनियाँ, पालक तथा दूसरी कई भाजियों से श्रेष्ठ हैं।"

वसन्त ऋतु में नीम में पतझड़ होता है और नये पत्ते निकलते हैं। चैत में नीम फूलती है और ज्येष्ठ-आषाढ़ में नीम के फल पकते हैं। चैत मास में नीम की कोमल पत्तियों का सेवन बड़ा गुणकारी होता है। एक स्वास्थ्य-सम्बन्धी कहावत में, जिसमें बताया गया है कि किस मास में किस वस्तु का सेवन करना

चाहिये, चैत्र में नीम की कोमल पत्तियाँ खाने का निर्देश किया गया है। वह कहावत यों है—

"सावन हर्रें भादों चीत। क्वार मास गुड़ खायो मीत।
कातिक मूरी अगहन तेल। पूस में करै दूध से मेल।
माघ मास घिव खिचरी खाय। फागुन उठके प्रात नहाय।
चैत मास में नीम बेसहनी। बैसाखै माँ खाय जड़हनी।
जेठ मास जो दिन को सोवै। वोकर ज्वर असाढ़ माँरोवै।

दन्त-रक्षा के लिये, जिस पर बहुत कुछ स्वास्थ्य-संवर्धन निर्भर है, नीम के दातून की उपयोगिता प्रत्येक व्यक्ति जानता है। कहा भी गया है—

"नीम दतूनी जे करैं, भूनी हर्रं चबायँ।
दूध बियारी नित करैं, तिन घर बैद न जायँ॥"

आयुर्वेद के मतानुसार नीम कटु, शीतल, कफ, व्रण, वमन, कृमि सूजन का नाश करनेवाली, पित्तदोष और हृदय के दाह को शान्त करनेवाली है। वात, कुष्ठ, विष, खाँसी, ज्वर, अरुचि, रुधिर-विकार, प्रमेह को दूर करने-वाली और केशों को हितकारी है।

किसी-किसी नीम के पेड़ से एक प्रकार का फेनदार पानी, जिसे नीम का मद व निम्बजल कहते हैं, गिरने लगता है। यह निम्बजल रक्तशोधक और अत्यन्त गुणकारी होता है।

नीम का अंग-प्रत्यंग—पत्तियाँ, छाल, लकड़ी, फूल, फल—उपयोगी और औषधयुक्त होता है। यहाँ भिन्न-भिन्न रोगों में नीम के प्रयोग लिखे जाते हैं।

रोगों में नीम के प्रयोग

१. ज्वर में—

(१) नीम की सींकें एक तोला, कालीमिर्च ७ नग—दोनों को पीसकर पानी के साथ पीने से सब प्रकार का ज्वर दूर होता है।

(२) नीम के फल की गिरी, जीरा सफेद, पीपल—सब चीजें समान भाग लेकर, करेले के रस में २४ घंटे खरल करके सुखा ले। सूख जाने पर पुनः करेले के रस में घोट-सुखाकर कपड़े में छानकर रख ले। इस चूर्ण को चढ़े हुए ज्वर में सलाई द्वारा सुरमे की तरह आँखों में आँजने से ज्वर उतर जाता है।

(३) नीमपत्र के दो तोले रस को गरम लोहे से छौंक कर पीने से ज्वर नष्ट हो जाता है।

(४) निम्बादि चूर्ण—नीम की छाल १० पल, त्रिकुटा ३ पल, त्रिफला ३ पल, सेंधा नमक, सेंचर नमक, और बिड़ नमक तीनों एक-एक पल, सज्जीखार, जवाखार २-२ पल, अजवायन ५ पल—सबको चूर्ण कर रख लें। ६ माशे से १ तोले तक यह चूर्ण सेवन करने से

इकतरा, तिजारी, चौथिया और संतत ज्वर नष्ट होते हैं।

२. मलेरिया में—

(१) नीम की पत्तियाँ १ तोला, भुनी हुई फिटकिरी ६ माशा—दोनों चीजें पानी के साथ पीस-कर १॥-१॥ रत्ती की गोलियाँ बना ले ज्वर आने के दो घंटे पूर्व एक गोली फिर एक घंटे बाद एक गोली खा लेने से मलेरिया ज्वर रुक जाता है।

(२) नीम की छाल, त्रिफला, अमलतास का गूदा, पटोलपत्र, मुनक्का, नेत्रबाला एक-एक तोला, मिश्री ६ माशे—सबका क्वाथ कर तीन समान भाग कर, ६-६ माशा शहद मिलाकर, दिन में तीन बार पीने से मलेरिया, वात पित्तज्वर दूर होकर मलावरोध दूर होता और भूख लगती है।

(३) नीम की कोपल ६ तोले, श्वेताभस्म ३ तोले—दोनों चीजें एक में खरल कर ३-३ रत्ती की गोलियाँ बना ले। एक गोली मिश्री तथा शीतल जल के साथ देने से मलेरिया ज्वर शर्तिया दूर हो जाता है।

३. आतपज्वर में—

५ तोले नीम के पंचांग का क्वाथ, २ तोले मिश्री मिलाकर पीने से लू लगने पर आया हुआ ज्वर दूर हो जाता है।

४. इन्फल्युएंजा में—

नीम की पत्तियाँ २ तोले, गिलोय २ तोले, तुलसी की पत्तियाँ २ तोले, हुरहुर की पत्तियाँ २ तोले, कालीमिर्च ६ माशे—सब चीजें बारीक पीसकर, जल में खरलकर, ३-३ रत्ती की गोलियाँ बना ले। तीन-तीन घंटे के अन्तर से एक-एक गोली गरम जल के साथ देने से इन्फल्युएंजा में यथेष्ट लाभ होता है।

५. हैजा में—

(१) नीम की सींकें ५ नग, इलायची बड़ी १ नग, लौंग ५ नग, नारियल की जटा की भस्म २ रत्ती—सब चीजें एक छटाँक जल में बारीक पीसकर थोड़ा गर्म कर ले। दो-दो घंटे के अन्तर से उपर्युक्त औषध पिलाने में हैजे में बहुत लाभ होता है।

(२) हैजा में पेशाब उतारने के लिए नीम के फूलों को पानी से पीसकर पेड़ू पर रखना चाहिए।

६. मन्दाग्नि में—

पकी हुई निबौलियाँ नित्य खाने से मंदाग्नि और रक्त-विकार में आशातीत लाभ होता है।

७. जुकाम में—

नीम की पत्तियाँ १ तोला, कालीमिर्च ६ माशे—दोनों चीजें नीम के डंडे से बारीक घोटकर चने बराबर

गोलियाँ बनाकर छाया से सुखा ले। गर्म जल के साथ तीन-चार गोलियाँ खाने से जुकाम दूर हो जाता है।

८. प्लेग में—

(१) प्लेग के दिनों में नीम का तेल लगाने और नीम की पत्तियों की धूनी देने से प्लेग से रक्षा होती है।

(२) प्लेग में नीम की पत्ती और कालीमिर्च पीसकर पीना अत्यन्त हितकारी है।

(३) नीम की पत्ती १ भाग, कालीमिर्च १ भाग, कुटकी एक भाग, आक की जड़ की छाल एक भाग, तुलसीपत्र का चूर्ण २ भाग, कुचला आधा भाग—सब औषधों को एक साथ खरलकर कपूर-मिश्रित जल के संयोग से २-२ रत्ती की गोलियाँ बना ले। एक-एक गोली गरम जल के साथ, २-२ घंटे के बाद देने से प्लेग में आशातीत लाभ होता है।

९. वमन में—

नीम की सींकें ७ नग गरम राख में भुलभुलाकर, २ बड़ी इलायची और ५ कालीमिर्च के साथ बारीक पीसकर, आधी छटाँक पानी के साथ पीने से वमन होना बन्द होता है।

१०. अम्लपित्त में—

सोंठ, मिर्च और नीम की छाल—तीनों का चूर्ण कर

एक तोला चूर्ण नित्य प्रातःकाल सेवन करना अम्लपित्त में अतिशय हितकारी है।

११. हिचकी में—

नीम की दो सीकें १ तोला पानी में पीसकर, मोरपंख का जलाया हुआ चन्दा (चन्द्रमा) एक रत्ती मिलाकर पीने से हिचकी बन्द हो जाती है।

१२. उदर-कृमि में—

(१) नीम की पत्तियों का स्वरस शहद मिलाकर चाटने से पेट के कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

(२) नीम की पत्तियाँ हींग के साथ खाने अथवा नीम की पत्तियाँ कालीमिर्च के साथ सुबह के वक्त पीने से पेट के कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

(३) नीम के फूल पीसकर नाभि के नीचे लेप करने से पेट के कीड़े मर जाते हैं।

१३. दस्त अधिक आने पर—

नीम की पत्तियों को पीस छानकर शक्कर मिलाकर पीने से दस्त बन्द हो जाते हैं—

१४. पेचिस में—

नीम की अंतरछाल तवे में रखकर नीचे आग कर जला डाले और पीसकर चूर्ण कर ले। एक तोला चूर्ण दही के साथ खाने से पेचिश दूर होती है।

१५. बवासीर में—

(१) नित्यप्रति नीम का ५ बूँद तेल खाना और मस्सों पर नीम का तेल लगाना बवासीर में हितकारी है।

(२) नीम की अंतरछाल ३ माशे और गुड़ ६ माशे एक में मिलाकर नित्य सेवन करने से बवासीर में लाभ होता है।

(३) नीम के फलों की मींगी एक से आरम्भ कर ११ तक, मूली के रस या ताजे पानी के साथ निगलने से रक्तार्श में यथेष्ट लाभ होता है।

(४) रक्तार्श में रक्तस्राव को रोकने के लिए प्रातःकाल ३-४ निबौलियों का सेवन करना महर्षि दयानन्द का अचूक और अनुभूत योग है।

(५) शुद्ध रसौत २ तोले, बकायन के बीजों की मींगी २ तोले, हड़ का छिलका २ तोले, नीम के बीज की मींगी १ तोला—सबको बारीक पीसकर कुकरौंधा के रस में घोटकर चने के बराबर गोलियाँ बना ले। नित्य प्रातःकाल एक गोली ताजे पानी के साथ निगलने से बवासीर में बहुत लाभ होता है।

(६) नीम की गिरी, मुसब्बर, रसौत—तीनों चीजें एक-एक तोला ले खरल कर झड़बेरी के बराबर गोलियाँ बना ले। नित्य प्रातःकाल एक गोली गौ के मट्ठा के

साथ लेने से कुछ दिन में खूनी बवासीर अवश्य दूर हो जाती है।

१६. प्लीहा में—

नीम की मींगी, अजवाइन, नौसादर—तीनों समान भाग लेकर चूर्ण कर ले। नित्य प्रातःकाल ३ माशे चूर्ण ताजे पानी के साथ लेने से पिलही नष्ट हो जाती है।

१७: मसूरिका (चेचक) में—

[१] नीम की दो सींके एक तोला जल के साथ पीसकर तीन दिन बच्चे को पिलाने से चेचक नहीं निकलती। कदाचित् निकल भी आवे तो बहुत जोर नहीं करती।

[२] नीम की कोपलें और मुलहठी दोनों समान भाग ले पीसकर २-२ रत्ती की गोलियाँ बना ले। सुबह-शाम २-२ गोली ठंडे पानी के साथ देने से बालक को चेचक निकलने की सम्भावना कम रहती है।

[३] नीम की पत्तियाँ ११ नग, कालीमिर्च ५ नग—दोनों को आध पाव जल में पीसकर पिलाने से बच्चों को सहसा चेचक नहीं निकलती।

[४] नीम के बीज, हल्दी, बहेड़े की मींगी—समान भाग लेकर ठंडे पानी में घोटकर, सुबह-शाम पिलाने से चेचक निकलने की आशंका नहीं रहती।

[५] चेचक के दानों पर नीम की लकड़ी चन्दन की भाँति घिसकर लेप करना और रोगी के ऊपर नीम की हरी पत्तियों का मूर्छल करना हितकारी है।

[६] नीम की पत्तियाँ, खैर की छाल, सिरस की छाल, गूलर की छाल सबको पीसकर चेचक के दानों पर लगाने से बहुत लाभ होता है।

१८. गठिया में—

नीम के कोमल पत्र, स्वर्णक्षीरी का पंचांग, सँभालू के पत्ते, अमरबेल, काली मकोय के पत्ते—सबको पीस कर गोमूत्र में पकावे। पक जाने पर छानकर गठिया में मलने से अत्यन्त लाभ होता है।

१९. खाँसी-दमा पर—

नीम की पत्तियाँ, साँभर नमक, भाँग सूखी, अड़ूसा कच्चे चना ५-५ तोला लेकर कूट-पीसकर टिकिया बना ले और एक मिट्टी के बर्तन में बन्द कर, कपरौटी कर दस सेर जंगली कंडों की आग में फूँक दे। ठंढा हो जाने पर उतारकर पीस ले और शीशी में रखे। इसमें से रत्ती-डेढ़ रत्ती दवा सुबह-शाम शहद के साथ चाटने से श्वास, कास, बलगमी खाँसी और दमा में लाभ होता है।

२०. पथरी में—

१२ तोले नीम की पत्तियों को पीसकर दो सेर जल

में औटावे, चतुर्थांश पानी जल जाने पर उतारकर उसका बफारा लेने से इन्द्रिय से पथरी गिर जाती है।

२१. सूजाक में—

[१] चार तोले नीम की छाल में ढाई सेर जल मिलाकर मिट्टी के पात्र में पकावे। थोड़ा पानी अवशेष रहने पर छान ले और उस क्वाथ को फिर कड़ाही में चढ़ाकर पकावे। २॥ तोले कलमीशोरा थोड़ा थोड़ा कर डालता जाय और नीम की लकड़ी से डुलाता जाय। सब पानी जल जाने पर उतारकर सुखा ले और पीसकर कपड़े से छान ले। नित्य दो रत्ती यह चूर्ण गाय के दूध की लस्सी के साथ लेने से सूजाक शीघ्र अच्छा हो जाता है।

[२] नीम की पत्तियों के रस में १ माशा तूतिया घोटकर सुखा ले और उसे कौड़ी के अन्दर भर दे। फिर कौड़ी को कोयलों की दहकती हुई आग पर रखे। जब कौड़ी जल जाय तो निकालकर चूर्ण कर ले। २ रत्ती चूर्ण गाय के दूध के साथ नित्य सेवन करने से सूजाक में शीघ्र ही लाभ दीखने लगता है।

[३] नीम की अँतरछाल, बबूल का गोंद, मखाना— सब चीजें आध-आध पाव ले। पहले गोंद को गाय के घी में भून ले। फिर सबको कूट-छानकर, नित्य सुबह-

शाम ६-६ माशे दवा अर्धभाग पानी मिले हुए गोदुग्ध के साथ कुछ दिनों तक खाने से सूजाक नष्ट हो जाता है।

२२. फीलपाँव में—

नीम की छाल एक तोला, खैरसार एक तोला दोनों चीजें एक छटाँक गोमूत्र में पीसकर, ६ माशा—शहद मिलाकर पीने से फीलपाँव दूर होता है।

२३. प्रमेह में—

[१] नीम की पत्तियों के २ तोले रस में एक तोला मिश्री मिलाकर नित्य पीने से प्रमेह अच्छा हो जाता है।

[२] हल्दिया प्रमेह में—नीम की छाल का रस शहद मिलाकर पीने से हल्दिया प्रमेह दूर होता है।

२४. सिकतामेह और मधुमेह में—

नीम की छाल का काढ़ा पिलाने से सिकतामेह और मधुमेह आराम होता है।

२५. रक्तस्राव और प्रदर में—

[१] नीम की छाल के रस में सफेद जीरा मिलाकर पीने से रक्तस्राव और प्रदर दूर होता है।

[२] नीम का तेल गाय के दूध में मिलाकर पीने से प्रदर रोग आराम होता है। अनुभूत है।

२६. अण्डवृद्धि में—

नीम की पत्तियाँ, अमरबेल, हुरहुर की पत्तियाँ, ऊँट की मेंगनी—सब चीजें समान भाग ले मनुष्य के मूत्र में पकाकर लेप करने से अण्डवृद्धि दूर होती है।

२७. वीर्यपतन में—

नीम की दो तोले पत्तियाँ पीसकर टिकिया बनाकर गाय के ५ तोले घी में डालकर जला डाले। इस प्रकार सिद्ध किये हुए घी का नित्य सेवन करने से वीर्यताप होना बन्द होता है।

२८. स्तम्भन के लिए—

नीम की मींगी और धतूरे के बीजों को पातालयन्त्र द्वारा अलग-अलग तेल निकाल ले। दोनों तेल समभाग एक में मिलाकर, तेल के बराबर पारा मिलाकर दिन भर खरल करे। फिर उसे शीशी में भरकर खारी भूमि में गाड़ दे। १५ दिन बाद निकाल ले। इस औषध को थोड़ा-सा पैर के तलवे में लगा ले। मुँह में कड़ुवाहट मालूम पड़ने पर संभोग करने से देर में वीर्यपात होता है।

२९. वृद्धावस्था में शक्तिवृद्धि के लिए—

नीम का फूल, फल, पत्तियाँ, गोंद, छाल, त्रिफला, कालाजीरा, सेंधा नमक, छोटी पीपर, नीलकण्ठी को

पत्ती—प्रत्येक ४-४ तोले लेकर, अड़ूसा की पत्तियों में खरल करके ३६० गोलियाँ बना ले। नित्य प्रातः काल एक गोली ताजे जल के साथ लेने से वृद्धावस्था में भी युवावस्था के समान बल का संचार होता है। नमक, दूध, दही खटाई से परहेज रखे।

३०. कामोत्तेजन के लिए—

मेहमिहिर तैल—अनार की छाल सवा तीन सेर, गिलोय सवा तीन सेर, भूमि आँवला सवा तीन सेर—सब चीजों को कूटकर ३२ सेर जल में क्वाथ करे। ८ सेर जल रह जाने पर उतारकर छान ले। फिर क्वाथ में शुद्ध तिल का तेल दो सेर, गाय का दूध एक सेर, नीम की छाल, अनार का बक्कल, चिरायता, गोखरू, रेणुका, बेल की छाल, नागरमोथा, त्रिफला, देवदारु, जामुन की छाल, आम की छाल, दाख, तगर—ये सब चीजें २॥-२॥ तोले मिलाकर धीमी आँच से पकावे। तेलमात्र शेष रह जाने पर उतार ले और शीतल हो जाने पर छानकर रख ले। इस तैल के लगाने से लिंगेन्द्रिय की शिथिलता, पैरों की जलन, शिरोदाह, कृशता दूर होकर कामेच्छा प्रबल हो जाती है।

३१. अर्द्धाङ्ग और सुस्ती में—

नीम की मोटी जड़ लेकर उसे खोखला करे। उसमें

सिंगरफ रखकर ऊपर से नीम का चूरा भरकर कपड़-मिट्टी कर १० सेर जंगली कंडों में फूँक दे, भस्म तैयार हो जायगी। अर्द्धांग और सुस्तीवाले को पान में आधी रत्ती भस्म देने से दो-तीन सप्ताह में अवश्य लाभ होता है।

३२. गर्भस्थापन-औषध—

नीम, कुटकी, हड़, बला, गंगेरन, अमोघा, गेंदा, सफेद दूब, काली दूब, लक्ष्मणा, प्रियंगु, सतावर—इन औषधों को पुष्य नक्षत्र रविवार के दिन लाकर, इनका रस दाहिने हाथ से दाहिनी नासिका में टपकावे और दाहिने कान तथा दाहिने हाथ में धारण करे। इन्हीं औषधों द्वारा सिद्ध किये हुए दूध-घी का सेवन करे तथा इन्हीं से औटाये हुए जल में प्रत्येक पुष्य नक्षत्र में स्नान करे, तो गर्भ अवश्य स्थिर हो जाता है।

३३. शीघ्रप्रसव के लिए—

नीम की जड़ स्त्री की कटि में बाँधने से प्रसव शीघ्र हो जाता है। प्रसव हो जाने पर जड़ को खोल देना चाहिए।

३४. योनि-रोगों पर—

(१) निबौली और एरण्ड के बीज की गूदी नीम

की पत्तियों के रस में पीसकर लेप करने से योनि की पीड़ा दूर होती है।

(२) नीम की निबौलियाँ नीम के रस में पीसकर योनि में रखने से या लेप करने से योनि-शूल दूर होता है।

(३) योनि से राध निकलता हो, तो नीम की पत्तियाँ सेंधा नमक के साथ पीसकर गोली बनाकर योनि में रखना लाभप्रद है।

(४) योनि से दुर्गन्ध आती हो तो नीम की पत्तियाँ, अड़ूसा, बच, कड़ुवे परवल, प्रियंगु के फूल— इन सबका चूर्ण योनि में रखना चाहिये। पहले अमल-तास के काढ़े से योनि धोना अधिक गुणकारी होगा।

(५) भग-संकोचन-प्रयोग—बकाइन की छाल सुखाकर पीसकर रखने से योनि सिकुड़कर संकीर्ण हो जाती है।

३५. स्तन-पाक पर—

निबौलियों के तेल के समान और कोई दवा स्तन-पाक मिटानेवाली नहीं है। स्तन-पाक पर निबौलियों का तेल चुपड़ना चाहिये।

३६. दाह में—

छाती, पेट या पिंडलियों में जलन होती हो तो नीम

की पत्तियों पर ठंडा पानी छिड़ककर, जलनवाले स्थान पर रखने से जलन शान्त हो जाती है।

३७. मूत्रदाह में—

नीम की सींकों और पत्तियों का रस २॥ तोले लेकर एक छटांक शर्बत उन्नाब में मिलाकर पीने से मूत्रदाह और मूत्रावरोध दूर होता है।

३८. हाथ-पैर की जलन में—

नीम के पंचांग को पीसकर तलुवों पर लेप करने से हाथ-पैर की जलन मिट जाती है।

३९. रक्तार्बुद में—

नीम का मूठा घिसकर लेप बना ले। एक अंगुल मोटा लेप दिन में तीन बार करने से रक्तार्बुद निश्चित रूप से अच्छा हो जाता है।

४०. तृषा और गर्मी में—

[१] नीम की सींकें और मिश्री कालीमिर्च के साथ पीसकर पीने से अधिक प्यास लगने की व्याधि दूर हो जाती है।

[२] नीम की पत्तियों के रस में मिश्री मिलाकर एक सप्ताह तक सुबह शाम पीने से कठिन से कठिन गर्मी शान्त हो जाती है।

४१. अधिक ऋतुस्राव पर—

महानिम्ब (बकायन) की कोपलों का एक तोला स्वरस पीने से अधिक ऋतुस्राव कम हो जाता है।

४२. मासिक धर्म रुकने पर—

[१] नीम की छाल २ तोले, २ भँगरैया २ तोले, सोंठ ४ माशे, पुराना गुड़ २ तोले—चारों चीजें पाव भर पानी में पकावे। आध पाव पानी शेष रहने पर उतारकर शीतल कर ले और छान ले। इसके नियमित सेवन से मासिकधर्म खुल जाता है।

[२] नीम की सात पत्तियाँ लेकर अदरख के रस में पीसकर पिलाने और नीम की पत्तियों को थोड़े पानी में पकाकर ढोड़ी के नीचे गुनगुना ही बाँधने से मासिक धर्म खुल जाता है।

४३. नकसीर में—

नीम की अंतरछाल को बारीक पीसकर लेप बनाकर सिर पर रखने से नाक द्वारा रक्त आना बन्द हो जाता है।

४४. रुधिर-विकार में—

(१) नित्यप्रति पकी निबौलियाँ खाने से रुधिर-विकार, मंदाग्नि और पित्तप्रकोप दूर होते हैं।

(२) नित्य ५ बूँद नीम का तेल बताशा या

ताजे पानी के साथ खाने से रक्त-विकार नष्ट होता है।

(३) नीम के फूल, सरफोंका की पत्ती, रक्त-चन्दन, चिरायता, मजीठ, नागरमोथा, गिलोय, अतीस, इन्द्रायन की जड़, विजैसार, हल्दी, दारुहल्दी, तितिड़ीक, निसोथ, कत्था की छाल, अड़ूसा की जड़, हर्र, बहेरा, आँवला, कुटकी, परवल की बेल, पित्तपापड़ा, बायबिड़ंग, बाकुची, बच, कूट, कुड़े की छाल, जवासा की जड़, और मुंडी—प्रत्येक औषध आध-आध पाव लेकर जौकुट करके २१ सेर पानी में भिगो दे। २४ घंटे बाद भबके द्वारा अर्क खींच ले। इस अर्क को सुबह, दोपहर और शाम को २ तोले लेकर शहद के साथ सेवन करने से सब प्रकार का रक्त-विकार दूर होता है।

४५. खुजली में—

[१] खुजली में नीम का तेल लगाना अत्यन्त हितकारी है।

[२] नीम की पत्ती, फूल-कुसुम, स्वर्णक्षीरी के बीज, कचूर और पँवार [चकौंड़ा] के बीज, १-१ छटांक; मिर्च १० माशे, मेंहदी के बीज, मोचरस, और कच्ची सरसों, २-२ छटांक—सबको पीसकर उबटन की भाँति बना ले। इस उबटन को मलने से खुजली और शरीर की रूसी दूर होती है।

४६. दाद में—

[१] बड़ी नीम [बकायन] का तेल लगाने से दाद शीघ्र ही अच्छा हो जाता है।

[२] दूधिया कत्था, नैनिया गन्धक, चौकिया सुहागा, पित्तपापड़ा, तूतिया, कलौंजी—सब चीजें समान भाग लेकर नीम की पत्तियों के रस में ६ घंटे घोटकर गोलियाँ बना ले। दाद को खूब खुजलाकर, इन गोलियों को जल में घिसकर लगाने से पुराने से पुराना दाद ३-४ दिन में निर्मूल हो जाता है।

४७. पामा में—

[१] निम्ब-तेल—नीम की पत्तियों का रस ४ सेर, सरसों का तेल एक सेर, आक का दूध, लाल कनेर की जड़, दन्ती की जड़, और कालीमिर्च १।-१। तोले लेकर, सब चीजें एक में मिलाकर पकावे। तेलमात्र शेष रह जाने पर उतारकर छान ले और स्वच्छ बोतल में रख ले। इस तेल के व्यवहार से पामा, अपरस, छाजन इत्यादि दूर हो जाते हैं।

[२] महातिक्त घृत—नीम की छाल, अमलतास की छाल, सतौने की छाल, कुटकी, पाठा, नागरमोथा, अतीस, त्रिफला, पटोल, खस, सफेद चन्दन, हल्दी, दारुहल्दी, पद्माख, धमासा, पित्तपापड़ा, दोनों सारिवा,

इन्द्रायन की जड़, बच, सतावर, मूर्बा, गिलोय, मुलहठी, चिरायता, इन्द्रजौ, अड़ूसा, और त्रायमाण—प्रत्येक औषध १-१ तोला लेकर, जल के साथ पीसकर, कल्क बनाकर, ३ सेर ८ तोले घी में ६ सेर १६ तोले आमले का रस तथा २४ सेर ६४ तोले पानी मिलाकर मंदाग्नि से पकावे। घृतमात्र शेष रह जाने पर छानकर रख ले। सुबह-शाम यह घृत दूध में मिलाकर सेवन करने से पामा निश्चय अच्छा हो जाता है। यह घृत अत्यन्त गुणकारी होता है। इसके सेवन से बड़े-बड़े कुष्ठ भी दूर हो जाते हैं।

४८. श्वेतकुष्ठ में—

[१] नीम के मद का अर्क खिंचवाकर सुबह-शाम २॥-२॥ तोले पीने से श्वेतकुष्ठ तथा अन्य रक्तविकार दूर होते हैं।

[२] सफेद दागों में लगातार कुछ दिनों तक नीम का तेल लगाने से आशातीत लाभ होता है।

[३] नीम की छाल ५ सेर, गुड़ पुराना ३॥ सेर, पीपल-चूर्ण २ तोले, त्रिफला-चूर्ण ६ तोले, कालीमिर्च का चूर्ण २ तोले—सब चीजें एकत्र कर मिट्टी के पात्र में रखकर, १६ सेर जल डालकर, पात्र का मुख स्वच्छ वस्त्र से बाँधकर रख दे। एक सप्ताह बाद ऊपर का अर्क

निकालकर छान ले और बोतलों में भरकर रख दे। सुबह-शाम २ तोले अर्क समानभाग पानी मिलाकर पीने से कुष्ठ, दाद, खाज, अपरस, उपदंश, फोड़ा, फुंसी इत्यादि सब प्रकार के रक्त-विकार दूर होते हैं।

[४] खदिरादि क्वाथ—नीम की छाल, खैरसार, गिलोय, अड़ूसा, पटोलपत्र, और त्रिफला—सब समान-भाग ले, मिट्टी के पात्र में काढ़ा बनाकर पीने से कुष्ठ में लाभ होता है।

[५] नीम की जड़, पत्तियाँ, फल, फूल, छाल १५ पल, लोहे की भस्म, हड़, पँवार के बीज, चित्रक, भिलावाँ, बायबिड़ंग, मिश्री, आँवला, हल्दी, पीपल, मिर्च, सोंठ, बावची, अमलतास का गूदा, और गोखुरू १-१ पल। सबको अलग-अलग चूर्ण कर, सब चूर्ण को एकत्र कर, भाँगरे के रस की २१ भावना दे। फिर अष्टमांश खैरसार की भावना दे। फिर सुखाकर नित्य एक कर्ष खैरसार के जल या घी या दूध के साथ पीवे तो सब प्रकार के कुष्ठ दूर होते हैं।

४९. रक्त-पित्त और कुष्ठ में—

नित्य ३ माशे नीम की पत्तियों का रस पीने से और नीम की पत्तियाँ डालकर औटाये हुए जल से

स्नान करने से भयंकर से भयंकर रक्त-पित्त और कोढ़ नष्ट हो जाता है।

५०. वात में—

लघुमंजिष्ठादि अर्क—नीम की छाल, दारुहल्दी, कुटकी, त्रिफला, बच, और गिलोय—सब औषधें पाव-पाव भर लेकर जौकुट कर, ६ सेर पानी में भिगोकर, २ दिन बाद भबके से शराब की भाँति अर्क उतार ले। यह अर्क नित्य सुबह-शाम २॥ तोले लेकर एक तोला शहद के साथ सेवन करने से वात-रक्त, गलित कुष्ठ तथा अन्यान्य चर्म-रोग—दाद, खाज, अपरस इत्यादि—नष्ट हो जाते हैं।

५१. व्रण में—

[१] नीम की पत्तियों को पीसकर शहद मिलाकर लगाने से बहता हुआ घाव अच्छा हो जाता है।

[२] एक तोला नीम की पत्तियों का रस, एक तोला सरसों का तेल और २॥ तोला पानी एक में मिलाकर मंदाग्नि से पकावे। तेलमात्र शेष रह जाने पर रख ले। इस तेल के लगाने से विषैला से विषैला घाव भी शीघ्र भर जाता है।

[३] धूप ४ तोले, देशी मोम ४ तोले, सिन्दूर ६ तोले, तूतिया ३ माशे, अलसी या काले तिल का तेल एक

पाव, और नीम की पत्तियों का रस आध सेर। पहले नीम की पत्तियों के रस में तेल डालकर पकावे। तीन भाग रस रह जाने पर मोम डाल दे। सारा रस जल जाने पर, आग से उतारकर गरम ही गरम छानकर पत्थर के खरल में डाले और तूतिया तथा धूप बारीक पीसकर मिला दे और खरल में खूब घोटकर रख ले। घाव को पहले नीम के पानी से धोकर, इस मरहम के लगाने से घाव शीघ्र सूखकर अच्छा हो जाता है।

५२. गर्मी के फोड़े-फुंसियों पर—

नीम की छाल को घिसकर फोड़े फुंसियों पर लगाने से साधारण फोड़े फुंसियाँ शीघ्र अच्छी हो जाती है।

५३. फोड़े में—

[१] नीम की पत्तियाँ डालकर उबाले हुए पानी से फोड़ा धोना बहुत लाभदायक है।

[२] नीम की पत्तियों को बारीक पीसकर कपड़-मिट्टी कर गर्म कर ले। जब मिट्टी सुर्ख होने लगे तो नीम की लुगदी को निकालकर थोड़ा गर्म ही फोड़े में बाँध दे, तो फोड़ा पककर फूट जाता है और लगातार इसी का प्रयोग करने से घाव भर जाता है।

[३] नीम की पत्तियों का रस, भाँगरे का रस, सेम की पत्तियों का रस एक-एक छटांक, बबूल की

पत्तियों का रस, मेंहदी की पत्तियों का रस—दोनों डेढ़-डेढ़ छटांक, सरसों का तेल एक सेर—सब चीजें एक में मिलाकर, दो सेर पानी डालकर मन्दाग्नि से पकावे। केवल तेल रह जाने पर उतारकर छान ले और ऊपर से आध पाव मोम पिघलाकर डाल दे। इस मरहम के लगाने से भयंकर से भयंकर फोड़ा भी सूखकर जल्दी ही आराम हो जाता है।

५४. नासूर में—

[१] नीम की पत्तियों के रस से चूना भिगो-भिगोकर तीन बार सुखा ले और पीसकर नासूर में भर दे। नासूर अवश्य अच्छा हो जायगा।

[२] नीम का तेल एक पाव, बहरोजा १ छटांक, विशुद्ध मोम एक छटांक। बहरोजा दरदरा कूटकर तेल के साथ पिघलावे। पिघल जाने पर मोम डाल दे। सब चीजें एक में मिल जाने पर रख ले। इस मरहम के लगाने से नासूर, भगन्दर-व्रण तथा हर प्रकार के फोड़े फुंसियाँ दूर हो जाती हैं।

५५. मृगी में—

बरसात में नीम के वृक्ष में जो हरित वर्ण के कीट होते हैं, उन्हें पकड़कर साया में सुखा ले और उसके चौथाई भाग कालीमिर्च डालकर चूर्ण बनाकर रख ले।

मृगी के दौरे के समय दो-तीन बार इस चूर्ण की नास लेने से नाक से कृमि गिरेंगे और मृगी दूर हो जायगी।

५६. सिर में कृमि हो जाने पर—

नीम की पत्तियों के रस में सफेद दूब का रस मिलाकर नाक में टपकाने और बिनौलियाँ पीसकर सिर धोने से सिर के कृमि नष्ट हो जाते हैं।

५७. कर्णशूल में—

नीम की पत्तियाँ दो तोले और नीलाथोथा तीन माशे पीसकर टिकिया बनावे। इस टिकिया को काले तिल के तेल में पकावे। जब टिकिया जलकर कोयला हो जाय तो छानकर रख ले। इस तेल को थोड़ा-थोड़ा कान में डालने से कान का दर्द दूर हो जाता है।

५८. कान बहने पर—

नीम की पत्तियाँ ३ तोले, सरसों का तेल ५ तोले, दोनों एक में मिलाकर जलावे। पत्तियों का अंश तेल में आ जाने पर ६ माशे हल्दी का चूर्ण डालकर जलावे। फिर छानकर शहद मिलाकर रख ले। इस औषध को कान में डालने से कान का बहना तथा अन्यान्य कर्ण-रोग दूर हो जाते हैं।

५९. कान में कीड़े हो जाने पर—

नीम की पत्तियों के रस में नमक डालकर, थोड़ा

गर्म कर कान में डालने से कान के कृमि निकल आते हैं।

६०. बहरापन में—

चार-पाँच बूंद नीम का तेल नित्य कान में डालने से बहरापन दूर हो जाता है।

६१. बालकों के कर्णस्राव में—

सरसों का तेल एक छटांक, नीम की पत्तियों का रस १ तोला, पानी एक तोला, हल्दी ३ माशे, हींग ३ माशे, कपूर २ माशे, अफीम एक माशा। हींग, हल्दी और नीम की पत्तियों को पीस लुगदी बना क्वाथ कर ले। फिर कड़ाही में तेल, पानी और क्वाथ मिलाकर आग पर रखे। तेलमात्र शेष रहने पर उतारकर थोड़े-से जल में अफीम और कपूर पीसकर मिला दे। कान साफ करके, इस तेल को कान में डालने से बालकों का कर्ण-स्राव तथा कान का हर प्रकार का रोग दूर हो जाता है।

६२. नेत्रों के शोथ और खुजली में—

नीम की पत्तियाँ पानी में उबाल ले। उबले हुए जल में ६ माशे फिटकरी डालकर नेत्रों को सेंकने से नेत्रों की सूजन और खुजली दूर होती है।

६३. परवाल में—

नीम के पानी में रुई डालकर साया में सुखा ले। सूख जाने पर बत्ती को काले तिल के तेल में जलाकर काजल

बना ले। इस काजल को गाय के मक्खन में मिलाकर, काँसे की थाली में काँसे की कटोरी से घोटकर अंजन बना ले। परवाल को उखाड़कर जस्ता की सलाई से यह अंजन आँजने से परवाल नष्ट हो जाता है।

६४. रतौंधी में—

नीम के कच्चे फल का दूध आँजने से रतौंधी दूर हो जाती है।

६५. मोतियाबिन्द में—

नीम की मींगी को चूर्ण कर रात में दो सलाई आँखों में आँजने से मोतियाबिन्द में बहुत लाभ होता है।

६६. आँख दुखने पर—

(१) नीम की पत्तियों का रस डालने से दुखती हुई आँखें अच्छी हो जाती हैं।

(२) नीम की पत्तियाँ पानी में पीसकर, एक तोला रस निकालकर, उसमें एक तोला पठानीलोध पीसकर गर्म करके आँख पर लेप करने से सुर्खी जल्दी कट जाती और आँख की पीड़ा दूर होती है।

(३) अफीम एक माशा, फिटकिरी एक माशा, आँबाहल्दी २ माशे, घीकुँवार का गूदा दो माशे, और रसौत एक माशा—सबका चूर्ण कर तिनपतिया की पत्ती के तीन माशे और नीम की पत्ती के एक तोला

रस में डालकर पोटली बनाकर आँख में चोभा करे या सो जाने पर आँख के ऊपर लेप करे। इससे आँख का दुखना, दर्द करना और सुर्खी दूर हो जाती है।

(४) विशुद्ध मिश्री ५ तोले, शुद्ध नीलाथोथा ३ माशे, जस्ताभस्म १ तोला, फिटकिरी २॥ तोले, नीम का अर्क ३ बोतल—सबको काँच के बर्तन में भिगो दे। २४ घंटे बाद काँसे के बर्तन में मंदाग्नि से पकावे। आधा रस जल जानेपर बोतल में रख ले। इस औषध के लगाने से आँख दुखना, कड़क होना, खुजलाहट, कम-दीखना इत्यादि नेत्र-विकार दूर होते हैं।

६७. नेत्रांजन—

(१) नीम की हरी पत्तियाँ, मोती असली, जस्ता-भस्म, कपूर भीमसेनी, लालचन्दन का बुरादा एक-एक तोला, शुद्ध राँगे की एक पाव की एक डली—सबको एक में मिश्रित कर लोहे की कड़ाही में घोटे। जब राँगा एक छटांक घिस जावे और अंजन बारीक हो जावे तो कपड़ से छानकर शीशी में भर ले। सुबह-शाम इस अंजन के आँजने से धुन्ध, ढरका, परवाल, दाह, दाने पड़ना इत्यादि-नेत्र-विकार शीघ्र नष्ट हो जाते हैं।

(२) नीमपत्र, गिलोय, हड़, नागरमोथा, आमला

कूट, दारुहल्दी, बायबिड़ंग, सेंधा नमक—सब चीजें एक-एक तोला, सफेद पुनर्नवा की जड़ २ तोले, कालीमिर्च २ माशे—सबको एक में मिलाकर खूब पीसकर, बकरी के मूत्र की भावना देकर गोली बना ले। यह गोली बकरी के दूध में घिसकर लगाने से फूली, जाला और माड़ा दूर होता है।

(३) नीम की कोपलें १० नग, जस्ता एक तोला लौंग ३ नग, इलायची ३ नग, मिश्री एक तोला—सबको एकत्र कर खूब बारीक पीसकर शीशी में रख ले। इस अंजन के प्रयोग से आँख का दर्द और ललाई दूर होती है और लगातार इसके प्रयोग से धुन्ध, जाला इत्यादि कटकर नेत्र-ज्योति तीव्र होती है।

६८. मसूढ़े फूलने पर—

मसूढ़े फूलने पर नीम के पंचांग के काढ़े से कुल्ला करना लाभदायक है।

६९. गले का दर्द—

नीम की पत्तियों को पीसकर रस निकाले। रस को गर्म कर शहद मिलाकर गरारे करने से गले का दर्द दूर होता है।

७०. आधाशीशी के दर्द में—

(१) नीम की पत्तियाँ २५, कालीमिर्च २५, चावल

के दाने २५—तीनों को एक में पीसकर चूर्ण कर ले। मस्तक के जिस भाग में दर्द होता हो, सूरज निकलने के पहले २-२ रत्ती इस चूर्ण की नास लेने से वर्षों का पुराना आधाशीशी का सरदर्द दूर हो जाता है।

(२) नीम की छाल, त्रिफला, चिरायता, हल्दी, गिलोय—ये सब समान भाग ले, षष्ठांश क्वाथ कर गुड़ डालकर पीने से आधाशीशी में अवश्य लाभ होता है।

७१. दन्तमंजन—

(१) नीम की लकड़ी के कोयले को बारीक पीस-कर दाँतों पर मलने से दाँत स्वच्छ और नीरोग रहते हैं।

(२) नीम की छाल, बबूल की छाल, मौलसिरी की छाल, सिरस के बीज, सुपारी जली, बादाम के छिलके जले हुए, प्रत्येक ५ तोले, खरियामिट्टी १० तोले, बहेड़ा २ तोले, कालीमिर्च ३ माशे, लौंग ६ माशे और पिपरमिण्ट ६ रत्ती—सबको पीस-छानकर रख ले। इस दन्त मंजन के प्रयोग से दाँतों की पीड़ा, टीस होना, पानी लगना, पीब आना इत्यादि व्याधियाँ दूर हो जाती हैं और दाँत स्वच्छ तथा चमकीले हो जाते हैं।

७२. सुन्नबहरी में—

पुराना गुड़ एक सेर, नीम की पत्तियाँ, फूल और

छाल एक-एक सेर—सबको मिलाकर, एक घड़े में भर-कर २० सेर पानी डाल बन्दकर रख दे। १५ दिन बाद निकालकर छान ले। नित्य सुबह-शाम एक-एक तोला इसे पीने से सुनबहरी मिट जाती है।

७३. असमय में केश पकने पर—

नीम की मींगी को एक सप्ताह भाँगरे के रस में घोट-कर सुखा ले और पातालयन्त्र द्वारा तेल निकाल ले। सुबह-शाम इस तेल की तीन बूँदें नास लेने से असमय में श्वेत हुए केश पुनः काले हो जाते हैं।

७४. केश झड़ने और श्वेत होने पर—

(१) नीम की पत्तियों को पानी में उबाल ले। पानी ठंढा हो जाने पर पत्तियों को अलगकर सिर धोने से बालों का झड़ना बन्द होता है, बाल काले हो जाते हैं और सिर में फुंसियाँ नहीं निकलती।

(२) नीम के बीजों को भाँगरे के रस की और विजयसार के रस की भावना दे। कोल्हू में बीजों का तेल निकलवाकर इस तेल की नास लेने और दूध-भात खाने से बाल जड़ से काले हो जाते हैं।

(३) नीम की पत्तियाँ और बेर की पत्तियाँ पीस-कर सिर में लगा लो और दो घण्टे बाद धो डालो। इसका एक महीने प्रयोग करने से बाल उग आते हैं।

७५. सर्प-विष न चढ़ने के लिए—

(१) चैत्रमास में मेष की संक्रान्ति में मसूर की दाल के साथ नीम की पत्तियाँ खाने से एक वर्ष तक विषैले से विषैले सर्प का भी विष नहीं चढ़ता।

(२) प्रतिदिन प्रातः सदैव कड़वी नीम की पत्तियाँ चबाने से सर्प का विष चढ़ने का भय नहीं रहता।

७६. सर्प-विष पर—

(१) सर्पदंशित व्यक्ति को कड़वी नीम की पत्तियाँ और नमक या कालीमिर्च खूब चबवाओ जब तक जहर न उतरे। विष रहने तक स्वाद न जान पड़ेगा। विष उतर जाने पर नीम की पत्तियाँ कड़वी लगने लगती हैं। इससे सर्प का विष चढ़े रहने की परीक्षा भी हो जाती है।

(२) जमालगोटे की मींगियों को नीम की पत्तियों के रस की २१ भावना देकर रख लो। इन मींगियों को मनुष्य की लार में घिसकर आँजने से सर्प का विष नष्ट हो जाता है।

७७. बिच्छू के विष में—

(१) नीम की छाल या पत्तियों या फलों को तम्बाकू की भाँति चिलम में रखकर पीने से बिच्छू का विष शर्तिया उतर जाता है।

(२) कड़ुवी नीम की पत्तियाँ, ताड़ के पत्ते, पुराने बाल, सेंधा नमक और घी—इन सबको मिलाकर दंशित स्थान पर धूनी देने से बिच्छू का विष शान्त हो जाता है।

(३) कड़ुवी नीम की पत्तियाँ चबाओ और मुख से भाप न निकलने दो। जिस ओर के अंग में बिच्छू ने काटा हो, उसके दूसरी ओर के कान में फूँक मारो इससे शीघ्र बिच्छू का विष उतर जाता है।

७८. बर्र और मधुमक्खी के विष पर—

नीम की पत्तियों को पीसकर दंशित स्थान पर खूब मलने से बिषैले कीटों का काटा हुआ आराम होता है।

७९. कनखजूरे के काटे पर—

कनखजूरे के काटे हुए स्थान पर नीम की पत्तियाँ और सेंधानमक एक में पीसकर लेप करने से लाभ होता है।

८०. अफीम के नशे पर—

नीम की पत्तियों का स्वरस पिलाने से अफीम का विष शान्त हो जाता है।

८१. सब प्रकार के विष में—

(१) नीम की पत्तियाँ, कालीमिर्च, सेंधानमक, शहद और घी—एक में मिलाकर पिलाने से स्थावर और जंगम दोनों प्रकार के विष शान्त हो जाते हैं।

(२) कड़ुवी नीम की पत्तियों का रस पिलाने या नीम की निबौलियों को गर्म जल के साथ पीसकर पिलाने से संखिया इत्यादि स्थावर विष शान्त होते हैं।

(३) नीम की छाल, सिरस की छाल, करंज की छाल, और तोरई—इन सबको एकत्र कर गाय के मूत्र में पीसकर पिलाने से स्थावर-जंगम दोनों प्रकार के विष नष्ट होते हैं।

(४) गर-विषनाशक प्रयोग—पसीने, रज इत्यादि पदार्थों को 'गर विष' कहते हैं जो कि मूर्खा स्त्रियाँ वशीकरण इत्यादि के लिए खिला देती हैं। इनके खा जाने से शरीर में पाण्डुता होती, बदन दुर्बल हो जाता, ज्वर आने लगता, मर्मस्थलों में पीड़ा होती तथा धातुक्षय और सूजन होती है। नीम, अड़ूसा और परवल के पत्तों के काढ़े में पानी में पीसी हड़ को मिला दो और फिर घी में पका लो। इसे 'वृषादि घृत' कहते हैं। इस घी के खाने से गर-विष शान्त हो जाता है। प्रयोग की मात्रा—हरड़ की लुगदी से चौगुना घी, घी से चौगुना नीमादि का क्वाथ तैयार करो। सबको मंदाग्नि से पकाकर घी रह जाने पर उतारकर छान-कर साफ बर्तन में रख लो।

८२. कामलारोग में—

प्रातः काल तीन माशे सोडा फाँककर, एक तोला नीम की पत्तियाँ पीस-छानकर, पाव भर पानी के साथ कुछ दिनों तक पीने से कामलारोग दूर हो जाता है।

८३. उपदंश में—

नीम की कोमल सींकों की छाल १ तोला, भाँगरा १ तोला, कालीमिर्च ११ नग—आध पाव पानी में पीसकर पीने से उपदंश शीघ्र ही आराम हो जाता है।

८४. पाण्डरोग में—

(१) पानी के साथ पीसकर नीम की पत्तियों का पाव भर रस निकालकर थोड़ी शक्कर मिलावे और किंचित् गर्म कर पीवे तो पाण्डुरोग अच्छा हो जाता है।

(२) नीम की सींकों की छाल ६ माशे, और सफेद पुनर्नवा की जड़ ६ माशे-दोनों चीजें एक छटांक जल में पीसकर पीने से पाण्डुरोग अवश्य दूर हो जाता है।

८५. कर्णमूल में—

कच्ची निबौली खिलाने और नीम के बीजों को नीम के ही तेल में पकाकर, महीन पीसकर, फुलाया हुआ नीलाथोथा डालकर, मरहम बनाकर, लगाने से कर्णमूल दूर हो जाता है।

८६. पसली चलने पर—

नीम की पत्तियों को मंदी आग में थोड़ा गर्म कर रस निकालकर मलने से पसली चलने पर बहुत लाभ होता है।

८७. जूते काटने पर—

जूते काटने पर, काटे हुए स्थान पर तेल चुपड़कर, नीम की पत्तियों की राख डालना हितकारी है।

८८. पित्ती उछलने पर—

नीम की पत्तियाँ पीसकर आँवले के साथ खिलाने या नीम की छाल का काढ़ा पिलाने से पित्ती दूर हो जाती है।

८९. नहारू में—

नीम की पत्तियों को पीसकर गुनगुना लेप करने से नहारू अच्छा हो जाता है।

९०. जलने पर—

नीम की पत्तियों का रस जले हुए स्थान पर लगाने से जलन मिटकर जला हुआ आराम होता है।

९१. ऊरुस्तम्भ पर—

ऊरुस्तम्भ पर नीम की जड़ घिसकर गरम करके लेप करना हितकारी है।

९२. फिरंग रोग में—

नीम की पत्तियों का चूर्ण १६ भाग, हड़ का चूर्ण २ भाग, आमले का चूर्ण २ भाग, और हल्दी का चूर्ण १ भाग—सबको एक में मिलाकर, अवस्थानुसार ३ से ६ माशे तक चूर्ण देने से भीतरी-बाहरी दोनों प्रकार का फिरंग रोग शीघ्र नष्ट हो जाता है।

९३. बिवाई फटने पर—

नीम के तेल में मोम पिघलाकर, बिवाई में लगाने से पीड़ा दूर होकर बिवाई फटना बन्द होता है।

९४. खटमल भगाने के लिये—

नीम की पत्तियों और गन्धक की धूनी देने से खटमल भाग जाते हैं।

९५. मच्छड़ों से बचाव—

मच्छड़ों के छिपने के स्थानों पर नीम की पत्तियों का धुआँ करने से मच्छड़ मर जाते हैं।

९६. पतिंगों से बचाव—

नीम के तेल का दीपक जलाने से दीपक पर पतिंगे नहीं आते।

९७ जुएँ मारने के लिये—

सिर में नीम का तेल लगाने से सिर की जूँ-लीख मर जाती हैं।

९८. खाद के लिए—

खेत में नीम की मींगी की खाद डालने से खेत अत्यन्त उपजाऊ हो जाता है और उसमें दीमक नहीं लगती।

९९. मुख-कान्ति-वर्द्धक प्रयोग—

(१) नीम के बीज सिरके में पीसकर मलने से झाईं नष्ट होती है।

(२) नीम की पत्तियाँ, अनार का बक्कल, पठानी लोध, हड़ का बक्कल, और आम का छिलका—सब चीजें समान भाग ले पानी में पीसकर मुँह पर लगाने से झाईं, मुँहासा, कील इत्यादि दूर होकर मुख की कान्ति बढ़ जाती है।

१००. कीटाणु-नाशक धूनी—

गन्धक, लोबान, कपूर, चन्दन, और अगर सम-भाग, सबकी दूनी मात्रा में नीम की पत्तियाँ मिलाकर चूर्ण कर ले। इस चूर्ण की धूनी देने से वायु शुद्ध हो जाती है और संक्रामक रोगों के कीटाणुओं का प्रभाव दूर हो जाता है।

मुद्रक—श्रीमती कमला भार्गव द्वारा—तेजकुमार प्रेस (प्रा०) लि० लखनऊ।